Toppersnotes®
Unleash the topper in you

1st ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 5

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता	1
2	राजस्थान का इतिहास (8वीं से 18वीं सदी तक)	6
3	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	32
4	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	40
5	प्रजामंडल आंदोलन	48
6	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	57
7	राजस्थान की चित्रकला	62
8	राजस्थान के हस्तशिल्प	70
9	राजस्थानी भाषा और बोलियाँ	75
10	राजस्थान के लोकगीत और वाद्य यंत्र	78
11	राजस्थान के लोक नृत्य	90
12	राजस्थानी लोकनाट्य	94
13	राजस्थान का साहित्य	97
14	राजस्थान के संत और लोक देवता	104
15	राजस्थान के मेले और त्यौहार	115
16	राजस्थान के आभूषण और वेशभूषा	125
17	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	127
18	राजस्थान के प्रमुख रीति–रिवाज	142

1 CHAPTER राजस्थान की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता

<u>कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बैराठ कालीबंगा (हनुमानगढ़)</u>

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष (1952)।
- उत्खननकर्ता - 1961 से 64 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम. श्रीवास्तव, एस,पी. श्रीवास्तव भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली के निर्देशन में
- उत्खननकर्ता चरण - 5
- कालीबंगा की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी।
- काली बंगा का शाब्दिक - अर्थ काले रंग की चूड़ियां ।
- स्थिति - राजस्थान के हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में
- जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए और ऐसा अनुमान है की लोग एक ही खेत में दो फसले उगते थे।
    - ✓ इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
    - ✓ खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
    - ✓ गेहूँ,जौ चना, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
- 2900 ईसा पूर्व तक यहाँ एक विकसित नगर था।
- **लिपि-** सैन्धव लिपि (अभी तक पढ़ी गई है)
- **कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ**
    - ✓ **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
        - § ये संकेत करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
        - § **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
    - ✓ **बेलनाकार मुहर**
        - सर्वाधिक मुहरें मिट्टी से बनी है एवं उन पर सैन्धव लिपि अंकित है जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
        - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।
        - मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है।
    - ✓ **बर्तन**
        - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त हुए है जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
        - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।
- कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है, तथा इन पर अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्यामितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है।
- **आभूषण**

- ✓ **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
- ✓ **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।

- **नगर नियोजन के दो टीले**
  - ✓ पूर्वी टीला (**नगर टीला)**
  - ✓ **पश्चिमी टीला (दुर्ग टीला)**
  - ✓ **दोनों टीलों के चारो और सुरक्षा प्राचीर भी बनी हुई थी।**
  - ✓ **कालीबंगा को हड़प्पा** सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है।
- **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
  - ✓ **कपास** की **खेती** के **अवशेष** प्राप्त
  - ✓ **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
  - ✓ केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
  - ✓ मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - ✓ शल्य **क्रिया** का प्राचीनतम उदाहरण
- 2600 ई.पू. में आये "भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य" मिला है।
  - ✓ बैल व **बारहसिंघा** की अस्थियाँ भी प्राप्त हुई।
- खिलौने
  - ✓ लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो बच्चों के मनोरंजन के प्रति आ**कर्षण** प्रकट करते हैं।
  - ✓ बैलगाड़ी के खिलौने प्राप्त हुए।
- **सात आयताकार** व **अंडाकार अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।
  - ✓ **यह** साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
  - ✓ **दुर्ग (किला)**
  - ✓ अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के **अवशेष** भी प्राप्त हुए।
  - ✓ मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है।
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।
- यह आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है तथा बनास नदी क्षेत्र (बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी) में होने के कारण इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड, ओझियाना, बालाथल, पछमता, भगवानपुरा, रोजड़ी आदि I
- अवधि – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- प्रथम उत्खनन कार्य – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास के निर्देशन में।

- अन्य उत्खननकर्ता – 1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद 1961-62 में एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया जिसमें राजस्थान प्रशासन की ओर से श्री पी.एल. चक्रवती ने भाग लिया।1961-62 में डेक्कन कॉलेज, पूना व मेलबर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया ने भी आहड़ का उत्खनन कार्य किया।
- आहड़ एक ग्रामीण संस्कृति थी। यहाँ के लोक ताँबा, लोहा, टिन व सोने से परिचित थे।

विशेषताएँ

- प्रमुख **उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
    - ✓ ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
    - ✓ ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त हुई है ।
- इस सभ्यता के लोग मकान बनाने के लिए धूप में सुखाई ईंटो एवं पत्थरों का प्रयोग का प्रयोग करते थे।
- मृतकों को गहनों के साथ दफनाते थे।
- माप तोल के बाट प्राप्त – वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भाण्ड का प्रयोग किया जाता था।
    - ✓ मृद्भाण्ड **उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- गोरे व कोठे आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड
    - ✓ **प्रमुख** खाद्यान्न - गेहूँ, ज्वार और चावल
- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें प्राप्त हुई है, जिनमे एक मुद्रा पर एक ओर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर यूनानी देवता अपोलो का चित्र अंकित है जिसके हाथों में तीर और तरकश है।
- "बनासियन बुल" – आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।
- राजसमन्द के गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्म संस्कृति मिली है, जिसे बनास संस्कृति भी कहा जाता है। यद्यपि आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका बहुतायत में उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की नींवो में पत्थरों का प्रयोग, कपड़े की छपाई हेतु लकडी के बने ठप्पे (रंगाई छपाई व्यवसाय के प्रमाण), ईरानी शैली के छोटे हत्थेदार बर्तन, हड्डी से निर्मित चाकू, एक मकान में एक पंक्ति में 7 चूल्हे (संयुक्त परिवार प्रणाली), टेराकोटा निर्मित 2 स्त्री धड़, लेपिस लाजुली (लाजवर्त) - बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत, रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं।

गणेश्वर (सीकर)

- सीकर में कान्तली नदी के किनारे स्थित है, जिसे "पुरातत्व का पुष्कर" भी कहा जाता है। यहाँ से ताम्रयुगीन संस्कृति का प्रचुर भंडार प्राप्त होने के कारण इसे "ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी"/ताम्र संचयी संस्कृति कहा जाता है।
- **उत्खनन** - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में और बाद में 1978-79 में विजय कुमार ने निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
- गणेश्वर 2800 ई.पू. की ताम्रयुगीन सभ्यता का प्रारम्भिक स्थल है व इस सभ्यता का नामकरण गणेश्वर टीले के नाम पर किया गया।
- वृहदाकार पत्थर के बाँध के साक्ष्य, मकान पत्थर के बनाए गए थे (ईंटो के उपयोग का कोई प्रमाण नही)।
- यहाँ से ताँबे का बाण और मछली पकड़ने का काँटा प्राप्त हुआ, तथा यहाँ से प्राप्त ताम्र उपकरणों में 99% तांबा है।

- गणेश्वर से तांबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो में निर्यात किया जाता था।
- दोहरी पेचदार शिरावाली ताम्रपिन भी यहाँ से प्राप्त हुई है। इसी प्रकार की पिन पश्चिमी एशिया में भी मिली है। सम्भवतः गणेश्वर से इन पिनों का निर्यात वहाँ किया जाता होगा।
- गणेश्वर के उत्खनन से प्राप्त सामग्री को' श्री राजकुमार हरदयाल राजकीय संग्रहालय' सीकर में रखा गया है।
- पुराविदों ने इस सभ्यता को पूर्व हड़प्पा कालीन ताम्रयुगीन सभ्यता कहा है। यह ताम्रयुगीन संस्कृतियों में सबसे प्राचीन सभ्यता है।
- यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों को “कृपषवर्णी मृदपात्र” कहते है, ये बर्तन काले व नीले रंग से सजाए हुए है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे वर्तमान कोटपुतली -बहरोड़ जिले के विराट नगर में स्थित लौहयुगीन सभ्यता है।
- **प्राचीन नाम**- विराटनगर
    - ✓ **मत्स्य महाजनपद** की **राजधानी**
- **खोजकर्ता** - 1837, कैप्टन बर्ट
- **उत्खननकर्ता**- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।
- 1837 में कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के प्रथम भाब्रू शिलालेख की खोज की थी।
- **बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व**
    - ✓ पाषाण, ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री, अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बौद्ध विहार, बौद्ध चेत्य के अवशेष, आहत मुद्राएँ यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
    - ✓ बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।
    - ✓ उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्धांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- **पुरातत्व के महत्व की तीन पहाड़ियाँ:**
    - ✓ बीज़क डूँगरी
    - ✓ भीम डूँगरी (भोमली की डूंगरी)
    - ✓ महादेव डूँगरी
- **36 मुद्राएँ प्राप्त हुई** - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के और 28 इंडो-ग्रीक मुद्राएँ जिनमे से 16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेंडर की मानी जाती है
- बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- जयपुर के राजा सवाई राम सिंह ने यहाँ खुदाई करवाई जिससे एक सोने की मंजूषा मिली, जिसमें भगवान बुद्ध के अवशेष है।
- भवन निर्माण के लिए मिट्टी की ईंटो का अत्यधिक प्रयोग।
- महाभारत के अनुसार, यहाँ में पांडवों ने अज्ञातवास के समय जीवनयापन किया था
- यहाँ 300 ई. पू. से 300 ई. तक के गोल चैत्यगृह मिले है
- यहाँ से बौद्ध संस्कृति, महाभारत काल, महाजनपद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।
- यहाँ के निवासी वस्त्र- बुनाई की तकनीक से परिचित थे

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	➢ यह सभ्यता राजसमंद जिले में गिलूण्ड के पास स्थित है। ➢ पछमता मेवाड़ क्षेत्र की आहड़-बनास सभ्यता से संबंधित है जो कि हड़प्पा के समकालीन है। ➢ यहाँ कई कलात्मक वस्तुएं जैसे नक्काशीयुक्त जार, सीप की चूड़ियां, टेराकोटा के मनके, शंख और जवाहरात जैसे लेपिस लेजूली (यह अर्द्ध कीमती पत्थर अफगानिस्तान के बदख्शां में पाया जाता है) मिले हैं।
गिलुण्ड सभ्यता	➢ राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित ग्रामीण संस्कृति । ➢ 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। तत्पश्चात 1998 से 2003 ई. के मध्य दक्कन कॉलेज पूना के प्रो.वी.एस. शिन्दे एवं पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) के प्रो. ग्रेगरी पोशल के निर्देशन में गिलुण्ड सभ्यता का उत्खनन किया गया। ➢ उत्खनन में विशाल भवनों (100×80), मिट्टी के खिलौनें, पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दांत की चूड़ियों के अवशेष मिले है। ➢ 5 प्रकार के मृद्धांड प्राप्त: ✓ सादे काले, पोलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित
बालाथल	➢ **उदयपुर** की वल्लभनगर तहसील बेड़च नदी के किनारे में स्थित। ➢ **खोजकर्ता -** वी. एन. मिश्र (1993) ➢ लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ✓ 11 कमरों का विशाल दुर्गनुमा भवन के अवशेष(दुर्गीकरण के पुरावशेष)। ➢ यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण" माना जाता है। ➢ **अपरिष्कृत मृद्धाण्ड** ✓ लोहा गलाने की भट्टियाँ भी प्राप्त हुई। ➢ योगी मुद्रा में शवाधान किया जाता था। ➢ लोग कृषि, आखेट तथा पशुपालन करते थे।
ओझियाना सभ्यता	➢ भीलवाड़ा के बदनोर के पास कोठारी नदी पर स्थित ताम्रपाषाणिक स्थल। ➢ सफेद बैल और गाय की मृण मूर्तियाँ प्राप्त। ➢ लाल काले मृदभांड की प्राप्ति ➢ उत्खनन - सर्वप्रथम उत्खनन 1998 में आर.सी. अग्रवाल के द्वारा किया गया। 2000 ई. में बी.आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाठी ने ओझियाना का उत्खनन कार्य भारतीय पुरातत्व संरक्षण विभाग के निर्देशन में किया। जिनके सहयोगी बी.आर. सिंह तथा एस.सी. गुप्ता थे। ➢ यह नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित सभ्यता स्थल है।

2 CHAPTER राजस्थान का इतिहास (8वीं से 18वीं सदी तक)

A. गुर्जर प्रतिहार वंश

- सर्वप्रथम पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है। जिसे रवि कीर्ति जैन द्वारा 633-34 ई. मे संस्कृत भाषा मे लिखा गया।
- बाणभट्टकृत हर्षचरित में भी गुर्जरों का उल्लेख है।
- डॉ. जी.एच. ओझा ने प्रतिहारों को जाति ना मानकर पद से संबंधित माना है।
- चंदेल वंश के शिलालेखों में भी गुर्जर प्रतिहार शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है।
- अरब यात्री कन्नौज के प्रतिहारों को जुज्र (गुर्जर) तथा अल मसूदी ने गुर्जर-प्रतिहारों को अल-गुजर व राजा को "बोरा" कहकर संबोधित किया है।
- इस वंश का छठी से बारहवीं सदी ईस्वी तक भारत में शासन रहा।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी गुर्जर-प्रतिहार मे गुर्जर जगह का उल्लेख किया है व अपनी पुस्तक सी.यू.की. मे लिखा है कि प्रतिहार गुजरात की सीमा के सुरक्षा प्रहरी थे।
- घटियाला शिलालेख के अनुसार हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण जिसे रोहिल्लद्धि भी कहते हैं, उनकी क्षत्रिय पत्नी भद्रा से चार पुत्र भोगभट्ट, कदक, रज्जिल तथा दह उत्पन्न हुए।
- हरिश्चन्द्र के इन चारों पुत्रों ने माण्डव्यपुर (मण्डौर) को जीतकर उसके चारों ओर परकोटे का निर्माण करवाया।
- मण्डोर के प्रतिहार वंश की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से शुरू होती है।
- रज्जिल के पौत्र नागभट्ट प्रथम का जिसने राजधानी मण्डौर से मेड़ता स्थापित की।
- नोट : एस.सी.राय के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों की सत्ता का प्रारम्भिक केन्द्र माण्डव्यपुर (मण्डौर) था।
- नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है। इनमें मण्डोर, जालौर, राजोगढ़ (अलवर), कन्नौज, उज्जैन, काठियावाड़ व भड़ोच के प्रतिहार मुख्य थे।
- नोट- हिन्दी ग्रंथ अकादमी के अनुसार नैणसी ने प्रतिहारों की 36 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- प्रतिहार वंश के दसवें शासक शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक देवराज भाटी को परास्त किया।
- बाउक इसी शीलुक तथा पद्मनी का पुत्र था जिसने 837 ई. की जोधपुर प्रशस्ति का उत्कीर्ण करवाकर मण्डोर के विष्णु मंदिर में लगवाया।
- इस प्रशस्ति को बाद के शासकों ने जोधपुर शहर के कोट में लगवा दिया।
- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डौर, प्रतिहारों का शासक बना जिसने वि.स. 918 (861 ई.) में दो घटियाला (रोहिंसकूप) लेख का उत्कीर्ण करवाया।इन शिलालेखों से प्रतिहारों के पूर्वजों की जानकारी प्राप्त होती है।
- कक्कुक ने घटियाला तथा मण्डौर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाए।
- जोधपुर के चेराई गांव से भी 936 ई. का एक लेख प्राप्त हुआ है, जिसमें प्रतिहार दुर्लभराज के पुत्र जसकरण का उल्लेख मिलता है।
- गुर्जर-प्रतिहार काल के अभिलेखों में "राजपुरुष" शब्द का प्रयोग शासकीय अधिकारियों, राजसेवकों या प्रशासनिक पदाधिकारियों के लिए किया गया है। यह एक व्यापक पद था जो विभिन्न प्रकार के अधिकारियों को इंगित करता था, विशेष रूप से वे जो राजा के निकट थे या राजकीय कार्यों में संलग्न थे।

- "राजपुरुष" एक प्रशासनिक श्रेणी के पदाधिकारी होते थे।
- यह शब्द कई गुर्जर-प्रतिहार शिलालेखों में मिलता है, जैसे कि घूमट, घटीयाला आदि।
- इसका प्रयोग शासन की केंद्रीय व्यवस्था को दर्शाने के लिए हुआ है।

<u>मण्डोर शाखा के प्रतिहार शासकों का कालक्रम क्रमश :</u>

- हरिश्चन्द्र (रोहिल्लद्धि), रज्जिल, नरभट्ट, नागभट्ट, तात (टाटा), भोज, यशोवर्धन, चन्दुक, शीलुक, झोट, भिलादित्य, कक्क, बाउक, कक्कुक है।

1. नागभट्ट प्रथम-(730-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम ने प्रतिहारों की राजधानी मंडोर से मेड़ता स्थानांतरित की।
- नागभट्ट प्रथम ने चावड़ो से भीनमाल जीतकर उसे अपनी राजधानी बनाया तथा आबू व जालौर पर अधिकार कर जालौर को नवीन राजधानी बनाया।
- कालांतर में नागभट्ट प्रथम ने मालवा (मध्यप्रदेश) को जीतकर अवन्ति (उज्जैन) को अपनी राजधानी बनाया।
- नोट : डॉ. दशरथ शर्मा नागभट्ट के गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी जालौर को मानते हैं।
- नागभट्ट प्रथम ने बिलोंचो (बलुचिस्तान निवासी) तथा अरबों के आक्रमण को विफल किया।
- ग्वालियर प्रशस्ति में नागभट्ट-प्रथम को म्लेच्छों (विदेशी आक्रमणकारी) का नाशक तथा दीनों का उद्धारक होने के कारण "नारायण" की उपाधि से विभूषित किया गया है।
- अभिलेखों में नागभट्ट प्रथम को राम का प्रतिहार, मेघनाथ के युद्ध का अवरोधक तथा इन्द्र के गर्व का नाशक तथा नारायण की मूर्ति का प्रतीक बताया है।
- नागभट्ट को क्षत्रिय मानते हुए नागभट्ट प्रथम की शाखा को रघुवंशी प्रतिहार भी कहा गया है।
- नागभट्ट प्रथम के बाद क्रमशः कुकुस्थ, देवराज व वत्सराज शासक बने।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल को पीलो भीलों का नाम दिया जिसे श्रीमाल के नाम से भी जाना जाता था ।

2. वत्सराज-(783-795 ई.)

- वत्सराज, नागभट्ट प्रथम के वंश का चौथा शासक था।
- वत्सराज को 'प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक' माना जाता है।
- वत्सराज के शासन काल में कन्नौज को लेकर त्रिपक्षीय (प्रतिहार- पाल- राष्ट्रकूट) संघर्ष प्रारम्भ हुआ।
- वत्सराज ने पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- वत्सराज, राष्ट्रकूट शासक ध्रुव प्रथम से पराजित हुआ ।
- वत्सराज ने कन्नौज शासक इन्द्रायुध को पराजित किया।
- ओसिया (जोधपुर) के जैन मंदिरो (मारू-गुर्जर शैली) का निर्माण वत्सराज के शासन काल मे हुआ था।
- वत्सराज के शासन काल मे ओसिया मे हरिहर का मंदिर बनाया गया जो पंचायतन शैली का उदाहरण है।
- ओसियों में श्वेताम्बर जैन मंदिर, ओसवाल समाज की कुलदेवी सच्चिका माता का मंदिर तथा सूर्य मंदिर के अलावा कुल 16 मंदिर है जिनका निर्माण 7वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य में प्रतिहारों द्वारा करवाया गया।
- वत्सराज के शासन काल मे उद्योतन सूरी ने अपना ग्रंथ कुवलयमाला 778 ई. मे जालौर मे लिखा। इसमें महाराज वत्सराज को रणहस्तिन कहा गया है ।
- वत्सराज के शासन काल में 783 ई. जिनसेन सूरी ने हरिवंश पुराण कि रचना कि थी। हरिवंश पुराण में वत्सराज को अवन्ति भूभृत (अवन्ति का राजा) कहा है।

3. नागभट्ट द्वितीय - (795-833 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय ने 816 ई. में कन्नौज शासक चक्रायुद्ध को पराजित किया तथा कन्नौज पर अधिकार कर गुर्जर प्रतिहार वंश कि राजधानी बनाया।
- कन्नौज का चक्रायुद्ध बंगाल शासक धर्मपाल पर आश्रित था। अतः नागभट्ट द्वितीय व धर्मपाल के मध्य मुंगेर (मुद्गिरी) का युद्ध हुआ, जिसमें नागभट्ट द्वितीय विजयी रहा।
- चाकसू अभिलेख के अनुसार शंकरगण (नागभट्ट द्वितीय का सामंत) ने बंगाल के गौड़ नरेश को पराजित किया।
- मुंगेर के युद्ध में मारवाड़ शासक कक्क तथा सामंत शंकरगण भी नागभट्ट द्वितीय के साथ था।
- बकुला/बचकुला अभिलेख के अनुसार नागभट्ट द्वितीय ने परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर की उपाधि धारण की थी।
- नागभट्ट द्वितीय के बाद उसका पुत्र रामभद्र व तत्पश्चात् मिहिर भोज प्रथम शासक बना।

4. भोज प्रथम-(836-885 ई.)

- भोज प्रथम को इतिहास मे मिहिर भोज के नाम से जाना जाता है, तथा इनके काल में वराह लेख, ग्वालियर प्रशस्ति, दौलतपुर अभिलेख, पेहोवा आदि की रचना हुई।
- ग्वालियर प्रशस्ति की रचना संस्कृत भाषा में बालादित्य द्वारा की गई थी। जिसमें प्रतिहारों को सोमित्र (लक्ष्मण) से उद्भूत हुआ माना है। इस प्रशस्ति में नागभट्ट-II की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।
- प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट-II ने –
  - ✓ आंध्र, सैंधव (सिंध), विदर्भ (महाराष्ट्र) व कलिंग (उड़ीसा) के शासकों को पराजित किया।
  - ✓ इसने कन्नौज शासक चक्रायुद्ध को पराजित किया।
  - ✓ इसने वंग (बंगाल), अनर्त (काठियावाड़), मालवा (मध्यप्रदेश), किराता, तुरुष्क (तुर्क), वत्स, मत्स्य राजाओं को भी पराजित किया।
  - ✓ इन विजय ने उपलक्ष में नागभट्ट -II ने परमभट्टारक महाराजाधिराज व परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- बारतों का संग्रहालय लेख व ग्वालियर चतुर्भुज अभिलेख में मिहिर भोज को 'आदिवराह' कहा गया है।
- दौलतपुर अभिलेख में मिहिर भोज को प्रभास कहा गया है।
- मिहिर भोज के समय के चाँदी व ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं जिन पर 'श्रीमदादिवराह' अंकित है।
- अरब यात्री सुलेमान ने भोज प्रथम (मिहिर भोज) के काल में भारत यात्रा की तथा उसने भोज प्रथम की सैन्य शक्ति व समृद्धि का उल्लेख करते हुए इसे इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु बताया है तथा जुज्र (गुर्जर) नरेश कहकर संबोधित किया है।
- इसका वास्तविक नाम भोज था तथा मिहिर, प्रभास, आदिवराह आदि मिहिर भोज की उपाधियाँ थीं।
- मिहिरभोज ने समरांगगण सूत्रधार, सरस्वती कंठाभरण, सिद्धांत संग्रह, राजकार्तंड, योग्यसूत्रवृत्ति, विद्या विनोद, युक्तिकल्पतरु, चारु-चर्चा, आदित्य प्रताप सिद्धांत, आयुर्वेद सर्वस्व, श्रृंगार प्रकाश, श्रृंगार मंजरी, प्राकृत व्याकरण, कूर्मशतक, भोज चंपू, कृत्यकल्पतरु, तत्त्वप्रकाश, राजमृदांड आदि ग्रंथों की रचना की।

5. महेन्द्रपाल प्रथम-(885-910 ई.)

- इतिहासकार बी.एन. पाठक ने इन्हें भारत का अंतिम महान हिन्दू सम्राट माना है।
- राजशेखर महेन्द्रपाल प्रथम के राजकवि व राजगुरु थे।
- राजशेखर ने महेन्द्रपाल को' सकल कला निलय', 'निर्भयराज', 'निर्भय नरेन्द्र', 'रघुकुल तिलक' तथा 'रघुकुल चूड़ामणि' कहा है।

- **राजशेखर द्वारा रचित ग्रन्थ-**
  - ✓ **नाटक-**
    - बाल रामायण
    - बाल भारत (प्रचण्ड पाण्डव)
    - विद्धशाल भंजिका
    - कर्पूर मंजरी (राट्टक)
  - ✓ **काव्य ग्रन्थ-**
    - काव्यमीमांसा
    - हर विलास
    - भुवन कोष

6. महिपाल-(913-944 ई.)

- राजशेखर ने महिपाल को आर्यावृत का महाराजाधिराज कहा था।
- महिपाल के समय अरब यात्री बगदाद निवासी अलमसूदी भारत आया।

7. राज्यपाल-(990-1019 ई.)

- इसके समय मे 1018-19 ई. में **महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण** किया था।

8. यशपाल

- यह गुर्जर प्रतिहार वंश का अंतिम शासक था।
- इलाहबाद के कड़ा नामक स्थान पर 1036 ई. का लेख मिला है जिसमे यशपाल के दान का वर्णन मिला है।

B. अजमेर के चौहान

- चौहानों का संबंध मोर्य **के वंश** से जोड़ा जाता है और उनका **मूल निवास स्थान चित्तौड़** को माना जाता है।
- **पृथ्वीराज विजय काव्य** के अनुसार चौहानों का निवास स्थान **जांगल देश सपादलक्ष (सांभर)**, **अहिछत्रपुर (नागौर)** आदि ।
- आदि पुरुष – वासुदेव
- **सपादलक्ष** के **चौहानों** को ही **अजमेर के चौहानों** के रूप में जाना जाता है ।
- प्रारंभ में चौहान **गुर्जर प्रतिहारों** के सामंत थे परन्तु **गूवक प्रथम** ने स्वतंत्र शासन स्थापित कर गुर्जरों की अधीनता अस्वीकार की।
- गुवक प्रथम ने **हर्षनाथ के मंदिर** का निर्माण करवाया था। हर्षनाथ **चौहानों के इष्टदेव** थे।
- इसका समय 551 ई. के आसपास माना जाता है।
- बिजोलिया शिलालेख के अनुसार उसने **सांभर झील का निर्माण** करवाया था।

1. वासुदेव चौहान

- चौहान राज्य का **संस्थापक** (551 ई.)।
- इन्होंने 551 ई. के आसपास सांभर (सपादलक्ष) में चहमान राज्य की स्थापना की।
- चौहानो की **प्रारम्भिक राजधानी** – अहिछत्रपुर ।
- अहिच्छत्रपुर नागौर/डीडवाना-कुचामन जिलों के क्षेत्र का प्राचीन नाम था।

2. गूवक

- पहला स्वतंत्र चौहान राजा ।
- पहले चौहान **प्रतिहारों के सामंत** हुआ करते थे।
- उन्होंने प्रतिहार **राजा नागभट्ट** की अधीनता स्वीकार नहीं की।

3. सिंहराज

- इन्होंने **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की।
- इनका पुत्र **विग्रहराज द्वितीय** था प्रारम्भिक चौहान शासकों में सबसे प्रतापी शासक हुआ ।

4. विग्रहराज द्वितीय

- वह 965 ई. के आसपास सपादलक्ष का राजा बना।
- इन्होंने चालुक्य **राजा मूलराज प्रथम** को पराजित किया।
- हर्षनाथ के अभिलेख (973 ई.) में विग्रहराज के शासन का उल्लेख है।
- इसने भडौच में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर बनवाया।

5. विग्रहराज तृतीय

- उसे वीसलदेव रासो का नायक 'वीसल/ वीसलदेव' माना जाता है।
- उनके पुत्र पृथ्वीराज प्रथम ने 1105 ई. में चालुक्यों से पुष्कर के ब्राह्मणों को लूटने से बचाया था और **'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर'** की **उपाधि** धारण की।

6. अजयराज (1105-1133)

- पृथ्वीराज के पुत्र।
- **अजयराज का समय** - चौहान साम्राज्य निर्माण का समय माना जाता है।
- 1113 ई. के आसपास अपने नाम से **अजयमेरू (अजमेर) की स्थापना** की।
- अजमेर से पहले राजधानी **सांभर थी जिसे सपादलक्ष** के नाम से भी जाना जाता था।
- अजयमेरु में एक गढ़ का निर्माण करवाया जिसे **गढ़बीठली**/ **तारागढ़** कहा जाता है।
- **वे शैव भक्त थे।**
  - ✓ परन्तु जैन और **वैष्णव धर्मावलम्बियों** को भी संरक्षण प्रदान किया।
  - ✓ इसने दिगम्बरों एवं श्वेताम्बरों के बीच शास्त्रार्थ की अध्यक्षता की।
  - ✓ **पार्श्वनाथ के मंदिर** के निर्माणार्थ **स्वर्ण कलश** भेंट किया।
- उसका समय आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था – **चाँदी (श्री अजयदेव के नाम से) और ताँबे के सिक्कों** से पता चलता है। ताम्बे के सिक्के = अजयप्रियद्रम्ब
  - सिक्कों पर उसकी **रानी सोमलवती** का नाम भी मिलता है।
  - **अजयराज अपने नाम से सिक्के जारी करने वाला पहला शासक था**

7. अर्णोराज / आनाजी चौहान (1133-55)

- साम्राज्य का विस्तार सिन्धु और सरस्वती नदी के प्रदेशों तक किया।
- मालवा के नर वर्मन को पराजित करने में सफल रहा।
- मालवा शासक जयसिंह ने अपनी पुत्री कन्चनदेवी का विवाह अर्णोराज से किया।
- अर्णोराज शैव धर्म का अनुयाई थे।
- 1135 में अर्णोराज ने अजमेर में तुर्कों को हराया तथा युद्ध भूमि को पवित्र करने के लिए पुष्करारण्य की चंद्रा नदी को रोककर आनासागर झील का निर्माण करवाया।

- पुष्कर में **वराह-मंदिर का निर्माण** करवाया।
- दरबारी विद्वान - **देव बोध और धर्म घोष** ।

- शाकम्भरी के चौहान शासक चन्दनराज की पत्नी रुद्राणी (आत्मप्रभा/योगिनी) यौगिक क्रिया में निपुण थी।
- ऐसा माना जाता है कि वह पुष्कर झील में प्रतिदिन एक हजार दीपक जलाकर महादेव की उपासना करती थी।

8. विग्रहराज चतुर्थ/ बीसलदेव चौहान (सपादलक्ष का स्वर्णकाल) (1158-63)

- पंजाब में मुसलमानों को तथा दिल्ली में तोमरों को पराजित किया।
- उसके बाद **दिल्ली-शिवालिक स्तंभ** लगवाया।
- चालुक्य नरेश कुमारपाल से पाली, जालोर और नागौर प्रदेश छीनकर अपने राज्य में मिला लिये थे।
- रचना - **हरकेलि नाटक** (संस्कृत)
- बीसलपुर की स्थापना (टोंक में बीसलपुर सागर बाँध)।
- इनके काल में दिल्ली में **शिवालिक स्तंभ अभिलेख** का उत्कीर्ण कराया गया।
- विग्रहराज चतुर्थ द्वारा **'जवालिपुर' का नाम बदलकर 'ज्वालापुर'**कर दिया गया।
- अजमेर में एक **संस्कृत पाठशाला** बनवाई तथा हरिकेलि नारक की पंक्तियाँ खुदवाई।
  - ✓ बाद में 1198 में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने तुड़वाकर **ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद** का निर्माण करवाया।
  - ✓ यहाँ पर पीर पंजाबशाह का अढाई दिन का उर्स लगता है।
- जैन विहार बनवाये और **धर्मघोष सूरी** के आदेश से एकादशी के दिन के लिये **पशुवध पर रोक** लगा दी।
- **दरबारी विद्वान-**
  - ✓ **सोमदेव** - ललित विग्रहराज।
  - ✓ जयानक भट्ट
- उपाधि-
  - ✓ बीसलदेव।
  - ✓ कविबान्धव/कवीबंधु।

बीसलदेव रासो

- **नरपति नाल्ह** द्वारा लिखित।
- **विग्रहराज चतुर्थ** और उनकी **रानी राजमती** की **प्रेम कहानी**।
- गौड़वाड़ी भाषा में लिखित।

9. पृथ्वीराज द्वितीय

- बिजोलिया के **पार्श्वनाथ मंदिर** के लिये **मोरझरी गाँव** को अनुदान दिया।

10. सोमेश्वर

- अजमेर में वैद्यनाथ का मंदिर बनवाया जिसमे ब्रह्मा, विष्णु महेश की मूर्ति लगाई गई।
- इसने अजमेर में 5 मंदिर बनवाए जिन्हें पांच कल्पवृक्ष कहा जाता है।
- बिजोलिया अभिलेख के अनुसार सोमेश्वर ने **'प्रताप लंकेश्वर'** की उपाधि धारण की।

11. पृथ्वीराज तृतीय (1177-1192)

- अजमेर के चौहान वंश का **अंतिम प्रतापी शासक**।
- पिता सोमेश्वर की मृत्यु के समय पृथ्वीराज की आयु मात्र 11 वर्ष थी अंत: माता कर्पूरी देवी (दिल्ली के **शासक** अनंगपाल तौमर की पुत्री) के संरक्षक में राजसिंहासन का दायित्व निभाया ।

- **उपाधियाँ – 'दलपुन्गल** (विश्वविजेता) व **रायपिथौरा'**
- पृथ्वीराज तृतीय ने रायपिथौरा' किले का निर्माण किया
- **जन्म** - अहिलवाड़ा/अंहिलपाटन (गुजरात) में 1166 ई. में।
- **मुख्यमंत्री** - कदंबवास (जिसे केम्बवास या केमास भी कहते हैं।)
- **सेनापति** - भुवनमल्ल
- **मंत्री** - पद्मनाभ।
- सूफी संत **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती पृथ्वीराज तृतीय के शासन काल में राजस्थान में आये**

आल्हा और उदल

- परमार्दिदेव चंदेल के वीर सेनानायक जो रूठकर पड़ौसी राज्य चले गए।
- 1182 में महोबा के युद्ध के दौरान परमाददेव के बुलाने पर दोनों सेनानायक वापस आ गए और लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

- अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया और सतलज प्रदेश में भंडानक जाति को खदेडा।

<u>पृथ्वीराज द्वारा लडे गए प्रमुख युद्ध</u>

1. **महोबा (मध्य प्रदेश) / तुमुल का युद्ध**

- पृथ्वीराज और परमार्दिदेव चंदेल (सेनापति आल्हा एवं उदल)
- पृथ्वीराज विजयी
- पृथ्वीराज ने सामंत **पुंजराय को महोबा** का अधिकारी नियुक्त किया गया।
- पृथ्वीराज ने 1182 ई. में भरतपुर-मथुरा क्षेत्र में भण्डानकों के विद्नोहों का अंत किया ।

2. **नागौर का युद्ध- 1184**

- पृथ्वीराज और गुजरात के भीम द्वितीय चालुक्य के मध्य, जगदे व प्रतिहार ने इनके बीच संधि करवा दी थी।
- पृथ्वीराज **जयचंद विवाद**
- पृथ्वीराज ने जयचंद की पुत्री संयोगिता से विवाह किया।
- अन्य कारण – दिल्ली का उत्तराधिकार, साम्राज्यविस्तार की नीति।

3. **तराइन युद्ध**

- तराइन का प्रथम युद्ध – 1991
  - ✓ पृथ्वीराज और मुहम्मद गौरी के मध्य
  - ✓ पृथ्वीराज विजयी
- तराइन का द्वितीय युद्ध (1192)
  - ✓ पृथ्वीराज और गौरी के मध्य
  - ✓ गौरी विजयी
  - ✓ **परिणाम** -इसी युद्ध के परिणामस्वरुप भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई और हिन्दू सत्ता का अंत हुआ।
  - ✓ विस्तृत विवरण कवि चन्द्रवरदाई की पृथ्वीराज रासो तथा हसन निजामी के 'ताजुल मासिर' एवं सिराज के 'तबकात-ए-नासिरी'में

दरबारी विद्वान

- चन्द्रबरदाई/ पृथ्वी भट्ट - पृथ्वीराज रासो
- जयानक - पृथ्वी राज विजय जनार्दन
- वागीश्वर
- विद्यापति गौड़
- विश्वरूप

Toppersnotes Unleash the topper in you

संस्कृतिक उपलब्धियाँ

- एक पृथक **कला व संस्कृति विभाग** बनाया। (मंत्री पद्मनाभ)
- दिल्ली के निकट **पिथौरागढ़** भी बनाया।

12. गोविंदराज चौहान

- गोविंदराज **चौहान वंश (Chahamanas)** से थे, जिसे शकम्भरी के चौहान भी कहा जाता है।
- प्रारंभ में राजधानी **शकम्भरी (वर्तमान सांभर, राजस्थान)** थी।
- बाद में राजधानी **अजमेर** स्थानांतरित कर दी गई थी।
- गोविंदराज ने **दिल्ली सल्तनत के नसीरुद्दीन महमूद के शासनकाल** (1246–1266) के दौरान स्वतंत्र रूप से शासन करने का प्रयास किया।
- मुस्लिम हमलों से बचने के लिए उन्होंने **अजमेर छोड़कर रणथम्भौर** में स्वयं को स्थापित किया।
- रणथम्भौर दुर्ग रणनीतिक रूप से मजबूत था और राजपूतों की शक्ति का केंद्र बन गया था।
- गोविंदराज ने इसे अपनी नई राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य की नींव रखी।

C. रणथम्भौर

1. गोविन्द राज

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के पुत्र गोविन्द राज ने 1194 ई. में रणथम्भौर में स्वतंत्र चौहान राज्य की स्थापना की ।
- उत्तराधिकारी वाल्हन, प्रहलादन, वीरनारायण।
- वीरनारायण को इल्तुतमिश के आक्रमण का सामना करना पड़ा।
- वीरनारायण का उत्तराधिकारी 'वाग्भट्ट' हुआ इसके समय बलबन ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया।

2. हम्मीर (1282-1301)

- वह जैत्रसिंह (जयसिम्भा) चौहान का तीसरा पुत्र था।
- 1282 ई. में हम्मीर देव का राज्यारोहण उत्सव मनाया गया।
- हम्मीर देव रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम शासक था।
- हम्मीर की बेटी **देवल दे ने** पद्मा तालाब में डूब कर जान दे दी
- धार के राजा 'भोज परमार' को भी हराया तथा चित्तौड़ के समर सिंह को भी हराया ।
- हम्मीर देव ने अपने जीवनकाल में **17 युद्ध लड़े जिनमें से 16 युद्धों में विजय** रहा ।
- 17वें तथा अंतिम युद्ध में वह दिल्ली के सुल्तान **अलाउद्दीन खिलजी की सेना से लड़ते हुए वीरगति** को प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- कोटियज्ञ करवाया।
  - ✓ **पंडित :** विश्वरूप।
- **शृंगार हार** नामक किताब लिखी।
- अपने पिता **जैत्र सिंह** की याद में, **32 खंभों की छतरी** का निर्माण करवाया। (जिसे न्याय की छतरी भी कहते है।)
- **दरबारी विद्वान -**
  - ✓ बीजादित्य।
  - ✓ राघव देव - हम्मीर के गुरु।

हम्मीर का मूल्यांकन-

- उसमें असीम उदारता और विचारों की दृढ़ता थी। उसके बारे में प्रसिद्धहै कि "**तिरिया- तेल हम्मीर हठ चढ़े न दूजी बार।**"
- इस कथन के अनुरूप उसने शरणार्थी की रक्षा के लिए राज्य और जीवन का त्यागकर इस कथन का अन्त तक आचरण किया।

हम्मीर के जानकारी के स्रोत

- नयन चन्द्रसूरी – हम्मीर महाकाव्य
- जोधराज एवं सारंगधर - हम्मीर रासो
- चन्द्र शेखर - हम्मीर हठ
- जयसिंह सूरी - हम्मीर मद मर्दन
- हम्मीरायण - व्यास भडाउ
- रजा हम्मीरदेरा कविता - भट्ट खेमा

हम्मीर देव और दिल्ली सल्तनत

- **हम्मीर बनाम जलालुद्दीन खिलजी**
  - ✓ मार्च, 1290 ई. में **जलालुद्दीन खिलजी** दिल्ली से रणथम्भौर की ओर आक्रमण के लिए रवाना हुआ।
    - जलालुद्दीन ने **चाइन/झाईन** (छाण) **पर अधिकार** कर लिया।
    - झाईन - रणथम्भौर की कुंजी
    - जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने झाईन से **रणथम्भौर** की ओर बढ़कर **दुर्ग की घेराबंदी** कर दी।
    - **सुल्तान** को सफलता नहीं मिली तो यह कहा कि- **'ऐसे दस किलों को तो मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी महत्त्व नहीं देता।'**
  - ✓ अमीर खुसरो ने मिफता उल फुतुह में इस आक्रमण का वर्णन किया है।
    - हम्मीर का सेनापति " **गुरुदास सैनी** " मारा गया
- **हम्मीर बनाम अलाउद्दीन खिलजी (1301)**
  - ✓ अलाउद्दीन खिलजी ने **1299 ई. के अंत में** शाही सेना को **रणथम्भौर दुर्ग पर आक्रमण** करने के लिए भेजा।
    - सेनापति:
  - ✓ नुसरत खान - रणथम्भौर में लड़ते हुए मारा गया।
    - उलुग खान।
    - अलप खान।
  - ✓ **हम्मीर के सेनापति -**
    - धरम सिंह।
    - भीम सिंह - लड़ते हुए मारा गया।
  - ✓ बाद में **रतिपाल व रणमल** ने **हम्मीर को धोखा** दिया और खिलजी के साथ मिल गए।
  - ✓ **1301 ई.** में अलाउद्दीन के आक्रमण करने से पूर्व राजपूत स्त्रियों ने हम्मीर की **रानी रंगदेवी व उसकी पुत्री पदम्ला के नेतृत्व में जल जौहर** किया।
    - अमीर खुसरो ने इस जौहर को अपनी पुस्तक खज़ाइन उल फुतुह में वर्णन किया है यह फारसी भाषा में जौहर का पहला वर्णन है।
    - **रणथम्भौर का यह साका राजस्थान के इतिहास का पहला साका** कहलाता है।
    - खिलजी द्वारा 1301 में रणथम्भौर को जीतकर सेनापति **उलगु खाँ** को सोंप दिया।

D. जालोर

- ऋषि **जाबाली** की तपोभूमि होने के कारण इसे **जाबालिपुर** कहते थे जो कालांतर में जालोर हो गया।
- जल वृक्षों की अधिकता के कारण जालोर नाम दिया गया।
- जालोर का किला सोनार गिरी(सुवर्ण गिरी)नामक पहाड़ी पर होने कारण यहाँ के शासक सोनगरा कहलाये।

1. कीर्तिपाल

- जालोर के चौहान वंश की स्थापना **1181 ई. में कीर्तिपाल** द्वारा जालोर को **परमारों** से छिनकर की गयी।
- मुहणोंत नैणसी ने कीर्तिपाल को '**एक महान राजा**' कहा ।
- सुधा पर्वत के अभिलेख में उसे राजेश्वर कहा गया ।
- बिजौलिया प्रशस्ति में जालोर को 'जाबालिपुर' कहा गया है।
- जालोर के किले को **सुवर्णगिरी, सोनगढ़ और कांचन गिरी** भी कहा जाता है।
- कीर्तिपाल का उत्तराधिकारी **समरसिंह** था। उसने जालोर में सु**दृढ़ प्राचीर, कोषागार और शस्त्रागार** का निर्माण करवाया।
- समरसिंह ने गुजरात के **भीमदेव द्वितीय से अपनी पुत्री लीलादेवी** का विवाह किया।

2. चाचिगदेव (1257-1282 ई.)

- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- यह नासिरुद्दीन महमूद व बलबन का समकालीन था लेकिन उसने जालौर पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया।

3. सामंत सिंह (1282-1305 ई.)

- इसके शासन काल में जलालुद्दीन खिलजी 1291 ई. में सांचोर तक आ गया था, लेकिन सारंगदेव बाघेला की सहायता से वह उसे आगे बढ़ने से रोकने में सफल रहा।

4. कान्हड़देव (1305-1311 ई.)

- **स्रोत-**
  - ✓ कान्हड़ देव प्रबंध - पद्मनाभ।
  - ✓ वीरमदेव सोनगरा री वात - पद्मनाभ।
  - ✓ नैणसी री ख्यात - मुहंणोंत नैणसी (राजस्थान का अबुल-फजल) ।
  - ✓ खाजईन-उल-फुतूह - आमिर खुसरो।
  - ✓ तारीख-ए- फ़रिश्ता - फ़रिश्ता।

कान्हडदे द्वारा लड़े गए युद्ध

1. सिवाना पर आक्रमण - 1308 (जालौर की कुंजी)

- कान्हड़ देव (सातल एवं सोम) vs एन- उल-मुल्क- मुल्तानी(खिलजी का सेनापति)
- इस समय सिवाना का पहला साका हुआ।
- भावले पवार के विश्वासघात के कारण असफल हुए।
- अलाउद्दीन ने सिवाणा पर अधिकार कर, सिवाणा का नाम खेराबाद रखा

2. जालोर पर आक्रमण 1311 ई.

- कान्हड़ देव (जेता देवरा) बनाम अलाउद्दीन खिलजी (सेनापति- कमालुद्दीन कुर्ग)
- जालौर का शाका कान्हड देव और पुत्र विरमदेव के नेतृत्व में।
- बीका दहिया सरदार के विश्वासघात के कारण असफल ।
- अलाउद्दीन ने जालोर का नाम जलालाबाद रखा।

कान्हडदेव बनाम अलाउद्दीन खिलजी

- **कारण –**
  - ✓ गुजरात अभियान के समय रास्ता देने को लेकर।
  - ✓ खिलजी द्वारा हिन्दू शासकों कों खुली चुनौती देना।
  - ✓ वीरमदेव और फिरोजा का प्रेम प्रसंग (नैणसी री ख्यात के अनुसार) ।
  - ✓ जालोर और सिवाना दुर्ग का सामरिक महत्व।
  - ✓ अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी निति।
- **1308 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने** जालोर के शक्तिशाली किले **सिवाणा पर** अधिकार कर लिया और उसका नाम **'खैराबाद'** रखा तथा **कमालुद्दीन कुर्ग को** वहाँ का प्रतिनिधि नियुक्त किया।
- **1311 ई. के युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी ने** जालोर के सोनगरा वंश का अंत कर दिया था

अलाउद्दीन खिलजी के विजय अभियान-

- रणथम्भौर (1301)- हम्मीर देव
- चित्तौडगढ़ (1303)- रावल रतन सिंह
- सिवाना (1308)- कान्हड़ देव
- जालौर (1311)- कान्हड़ देव एंव वीरमदेव

- अलाउद्दीन ने **अलाई तोपखाने की मस्जिद** का निर्माण करवाया।
- पद्मनाभ द्वारा रचित ग्रंथ - 1.'कान्हड़दे प्रबंध' 2. वीरमदेव सोनगरा री ख्यात

E. मेवाड़

- मेवाड़ - गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र।
- जिले: भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ और उदयपुर
- **विस्तार-**
  - ✓ उत्तर पश्चिम: अरावली से घिरा हुआ।
  - ✓ दक्षिणी क्षेत्र : पहाड़ी - जंगलों से युक्त ।
- मूल रूप से मेदपाट (मेर/ मेद् जाति के अधीन) - समय के साथ भ्रष्ट रूप में मेवाड़ बन गया।
  - ✓ अन्य नाम - प्रग्वाट, शिवी, मेदपाट
- एकलिंगजी - गुहिलों द्वारा निर्मित 10वीं शताब्दी के सबसे पुराने मंदिरों में से एक।
  - ✓ उदयपुर के पास स्थित
  - ✓ महाराणा कुम्भा ने मंदिर की पूजा और प्रबंधन के लिए कई ग्राम दान स्वरूप प्रदान किए थे। ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, **नागदा, कालोड़ा, मालखेडा और भीमाना** जैसे गांव एकलिंगजी मंदिर को समर्पित किए गए थे, ताकि वहां की पूजा-पद्धति और व्यवस्थाएं निर्बाध रूप से चल सकें।

मेवाड के महत्वपूर्ण शासक

1. गुहिल - सिसोदिया वंश

- आदि पुरुष: गुहिल/ गुहादत्त (566 ईस्वी)
- गुहिल के बारे में जानकारी का प्रमुख स्त्रोत सामोली अभिलेख है।
- पिता:शिलादित्य
- माता: पुष्पवती
- मुहणौत नैणसी ने गुहिलों की कुल 24 शाखाओं का वर्णन किया है।

2. बापा रावल

बप्पा की माता और पत्नी ने नागदा में शिव के दो मंदिर बनवाये जो अब सास- बहू के मंदिर के नाम से विख्यात है। (सहस्त्रबाहू मंदिर)

- बप्पा रावल का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.) में माना जाता है।
- इस प्रकार हारित ऋषि के आशीर्वाद से बापा को मेवाड़ का राज्य प्राप्त हुआ।
- राज प्रशस्ति के अनुसार बप्पा ने 734 ई. में चित्तौड़ के शासक मान मोरी को हराकर उस पर अधिकार कर लिया।
- राजधानी - नागदा
- उपाधि - शील, महेन्द्र, खुम्माण और कालभोज, राजगुरु, चक्कवै, हिन्दु, सूर्य।
- सोने के सिक्के चलाये जो वैभव का प्रतीक है।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए अफगानिस्तान तक चला गया तथा वहाँ के शासक सलीम को हटाकर अपने भांजे को राजा बनाया। इसलिए इतिहासकार सी.वी. वैद्य इसकी तुलना चार्ल्स मोर्टेल (फ्रांसीसी सेनापति, जिसने यूरोप में सर्वप्रथम मुसलामानों को परास्त किया था) से करते हैं।
- 734 ईस्वी - बापा ने मान मोरी को परास्त कर चित्तौड़ पर कब्ज़ा किया।
- रावलपिंडी का नाम उन्हीं के नाम पर पडा।
- उसने उदयपुर के निकट कैलाशपुरी में एकलिंग (लकुलीश) जी के मंदिर का निर्माण करवाया।

3. अल्लट

- पिता: भृत भट्ट
- 10वीं शताब्दी के आसपास मेवाड़ प्रदेश का शासक बना।
- आलु रावल भी कहा गया।
- आहड़ को दूसरी राजधानी बनाया।
- आहड़ में एक वराह मंदिर का निर्माण करवाया।
- देवपाल परमार को परास्त करने में सफलता प्राप्त की।
- माता राष्ट्रकूटों की कन्या - इसलिये उसे राष्ट्रकूटों का सहयोग भी प्राप्त था।
- हूण कन्या हरियादेवी से विवाह किया।
  - ✓ हूणों का भी सहयोग प्राप्त था।

- माना जाता है की अल्लट ने सर्वप्रथम मेवाड़ में नौकरशाही का गठन किया (सारणेश्वर प्रशस्ति के अनुसार)।

4. नरवाहन

- अल्लट की मृत्यु के बाद नरवाहन मेवाड़ का शासक बना ।
- इसके समय का शिलालेख (971 ई.) एकलिंगजी में स्थित लकुलीश मंदिर में प्राप्त हुआ है, जिसमें मेवाड़ की राजधानी नागदा को ही बताया गया है।
- नरवाहन शिव का उपासक था।
- आहड़ अभिलेख (आटपुर) 977 ई. के अनुसार नरवाहन का विवाह चौहान राजा जेजय की पुत्री से होना बताया गया है।
- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार इसके वंशजों ने ही भावनगर , पालिताना, रेवाकाण्ठा एवं राजपीपला में गुहिल वंश का शासन स्थापित किया था।

उत्पत्ति के सिद्धान्त

- डॉ. गौरी शंकर ओझा गुहिलों को सूर्यवंशी मानते हैं, I
- डी.आर. भण्डारकर एवं गोपीनाथ शर्मा मेवाड़ के गुहिलों को ब्राह्मण वंश से मानते हैं।

5. जैत्रसिंह (1213-53 ईस्वी)

- चीरवा शिलालेख में इन्हें एक शक्तिशाली शासक के रूप में वर्णित किया गया है।
- मेवाड़-नाडौल के बीच की लड़ाई समाप्त की।
  - ✓ नाड़ौल के शासक उदयसिंह द्वारा पौत्री रूपादेवी का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह से किया गया।
- इनके समय दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश ने नागदा पर आक्रमण किया (संभवत: 1222 ई. - 1229 ई. के मध्य)।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक हम्मीर मर्दमर्दन में भूताला के युद्ध की जानकारी मिलती है।

भूताला का युद्ध: 1227 ईसवी

- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के मध्य हुआ।
- जैत्रसिंह जीत गए

- जैत्रसिंह ने तुर्की सेन को भागने के लिये विवश कर दिया (1222 ई. और 1229 ई.) ।
  - ✓ जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश को परास्त कर दिया परन्तु इस अभियान में मेवाड़ की राजधानी नागदा को भारी नुकसान उठाना पड़ा।
  - ✓ इसी वजह से जैत्रसिंह ने अपनी राजधानी नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित किया।
- जैत्रसिंह का काल - मध्यकालीन मेवाड़ के इतिहास में स्वर्णकाल (डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार)।

6. तेजसिंह (1253-1273 ई.)

- जैत्रसिंह का पुत्र - 1253 ई. में मेवाड़ की गद्दी पर बैठा।
- उपाधि: ‘‘परमभट्टारक‘‘, महाराजाधिराज और ‘‘परमेश्वर‘।
- उनकी रानी जयतल देवी ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया।
- उन्हीं के समय “श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि” पुस्तक लिखी गई।

- दिल्ली के सुल्तान गयासुद्दीन बलबन ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- परन्तु उसको सफलता नहीं मिली।

7. समरसिंह (1273 - 1302 ई.)

- तेजसिंह का पुत्र ।
- 8 शिलालेख - अपना प्रभाव बनाने के लिये छोटे राज्य के संबंध में कठोर नीति का अनुसरण ।

- समरसिंह ने तुर्कों को गुजरात से निकाला और गुजरात का उद्धार किया।

- राज्य में जीवहिंसा रोक दी थी।
- प्रसिद्ध शिल्पी और कलाकार - पदमसिंह, केलसिंह, कल्हण, कर्मसिंह।

साका = जौहर + केसरिया

- जौहर – यह राजस्थान की प्राचीन प्रथा है जिसमें महिलाएं अपने स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती थी।
- केसरिया – जब वीरों को लगता था कि वे युद्ध नहीं जीत पाएंगे तब मरने-मारने की भावना लेकर सिर पर केसरिया धारण करते थे और युद्ध में उतर जाते थे।